Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2022, VOL- 10/72
https://doi.org/10.21922/srjis.v10i72.11618

विवेकानन्द केन्द्र की स्थापना का ऐतिहासिक पुनरावलोकन

अतुल कुमार[1] & भरत कुमार पंडा[2], Ph. D.

[1]पी-एच.डी. शोधार्थी

[2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय, हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र - 442001

Paper Received On: 25 AUGUST 2022
Peer Reviewed On: 31 AUGUST 2022
Published On: 01 SEPTEMBER 2022

Abstract

स्वामी विवेकानन्द ने अपने जीवन के अत्यंत अल्प समय में ही सारे विश्व को जो राह दिखाई संभवतः कोई अन्य कई सौ वर्षों तक जीवित रह कर भी न कर पाता। उनके कर्मयोग का संदेश कर्म को ईश्वर के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। उनका कहना था कि आधुनिक काल में भारत का जो पतन हुआ है वह धर्म की अज्ञानता के कारण हुआ है। इसलिए जीवन में धर्म की अज्ञानता को दूर करना मनुष्य का परम लक्ष्य होना चाहिए। इस अज्ञानता को दूर करने के लिए हमें सही मार्गदर्शक शिक्षा की आवश्यकता है। जो प्रत्येक भ्रांतियों को दूर कर यथार्थ का ज्ञान कराये। इसी कारण से उन्होंने शिक्षा की राष्ट्र केन्द्रीयता के आह्वाहन के साथ राष्ट्र के युवा वर्ग उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत के साथ राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के लिये प्रेरित किया। स्वामी जी के इन विचारों से प्रेरित होकर एकनाथ जी ने सर्वप्रथम विवेकानन्द शिला स्मारक, कन्याकुमारी को प्रतिष्ठित कराया। उसके पश्चात् स्वामी जी के विचारों को मूर्त रूप देने के लिए विवेकानन्द केंद्र की स्थापना की। वर्तमान समय में विवेकानन्द केंद्र भारत के 24 राज्यों और 2 केन्द्रशासित प्रदेशों में विभिन्न कार्यक्रमों जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण एवं जनजातीय कल्याण के कार्यक्रम प्रकाशन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास सम्बन्धी कार्यों के द्वारा विकास के नित नए प्रतिमान स्थापित कर रहा है तथा स्वामी विवेकानन्द जी के कल्पनाओं को मूर्त रूप दे रहा है। इस लेख के माध्यम से शोधार्थी ने विवेकानन्द केंद्र की स्थापना का इतिहास, उद्देश्य एवं परियोजनाओं को सभी के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः *एकनाथ रानडे जी, विवेकानन्द शिला स्मारक, विवेकानन्द केंद्र।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना: हमारा देश सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहा है, किंतु कई आक्रमणों एवं विदेशी साम्राज्य से संघर्ष ने हमारी शिक्षा पद्धति एवं मानसिकता को प्रभावित कर दिया है। उसके बाद अंग्रेजों ने हमारी शिक्षा को प्रभावित कर हमें मानसिक रूप से पंगु बनाकर हमारे ऊपर लगभग 200 वर्षों तक शासन करने का प्रयत्न करते रहे। *"तथापि उसी समय की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली वर्तमान समय*

में हमारी मार्गदर्शक बनी हुई है जबकि उस समय की अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य ब्रिटिश राज्य को भारत में स्थायी एवं शक्तिशाली बनाना, पाश्चात्य संस्कृति साहित्य का प्रचार-प्रसार करना, बाबू वर्ग का निर्माण करना एवं निस्यन्दन सिद्धांत द्वारा कुछ भारतीय लोगों को अंग्रेजी पढ़ा कर उन्हें अंग्रेजी के प्रति निष्ठावान बनाना तथा शेष को इससे वंचित रखना था।" **(मिश्र, 2011)**। जिसका परिणाम यह हुआ की स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय शिक्षा का भारतीयकरण नहीं हो पाया। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी पुस्तक 'आवर एजुकेशन' लिखा है कि, *"शिक्षा की संपूर्ण प्रणाली भारतीय संस्कृति और परंपरा से पूर्णतया विलग है। जबकि वह देश जीवंत नहीं कहा जा सकता है जिस देश के बच्चे अपनी संस्कृति की जानकारी न रखते हो एवं उस पर गर्व न करते हो। जब हमें अपनी संस्कृति का ज्ञान ही नहीं है तो हम गर्व किस पर करेंगे।"* **(मिश्र, 2011)**। जिसके संदर्भ में स्वामी जी यह चाहते थे कि *"यदि हमारे देश की सभी धार्मिक भावनाओं को जनहित के कार्यों में परिवर्तित कर दिया जाए तथा देश के सम्पूर्ण धार्मिक आवेश को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में बदल दिया जाए, तो यह कितनी विशाल शक्ति होगी! यह एक बहुत बड़ी योजना है, बहुत बड़ी परिकल्पना है"* **(भिडे एवं परांजपे, 2015)**। स्वामी जी के इन्हीं विचारों से अभिप्रेरित होकर एकनाथ रानडे जी ने 7 जनवरी सन् 1972 में विवेकानन्द केंद्र, कन्याकुमारी की स्थापना की। यह संस्थान मुख्यतः भारत के पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड, अंडमान निकोबार द्वीप समूह आदि जगहों पर आवासीय व सामान्य विद्यालय स्थापित कर स्वामी विवेकानन्द जी के कल्पनाओं को साकार कर रहा है। यह संस्थान केवल शिक्षा के लिए ही कार्य नहीं करता बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक स्थिति में प्रगति लाने के उद्देश्य से पोषक बालवाडिया, युवा प्रेरणा शिविर, ग्रामीण पुस्तकालय, चिकित्सा सेवा, सांस्कृतिक वर्ग, नियमित योग प्रशिक्षण शिविर और आध्यात्मिक साधना शिविर का भी आयोजन करता है। जिससे देश का सर्वोतोन्मुखी विकास हो। भारत सरकार की ओर से विवेकानन्द केन्द्र को शिक्षा एवं ग्रामीण विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिये 16 जनवरी 2019 को वर्ष 2015 का गांधी शांति पुरस्कार दिया गया। केन्द्र को पुरस्कार राशि के रूप में 1 करोड़ रूपये मिला, जिसे केन्द्र ने पुलवामा हमले में शहीद हुये जवानों के परिवारों को दान में देने की घोषणा की ***(स्रोत:khabar.ndtv.com) /***

विवेकानन्द केंद्र की स्थापना: कन्याकुमारी में बना विवेकानन्द शिला स्मारक भारतीय स्थापत्य कला की सुंदरता, पवित्रता के साथ-साथ पूरे राष्ट्र की महत्वाकांक्षाओं एवं एकता का अद्वितीय प्रतीक है क्योंकि पूरे राष्ट्र ने इसके निर्माण की इच्छा व्यक्त की तथा उसके लिए काम करके अपना योगदान दिया। यह एक ऐसा स्मारक है, जिसकी मूल कल्पना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने की थी, जिसे रामकृष्ण मिशन का आशीर्वाद मिला। सभी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय संस्थाओं ने इसे अपना पूरा समर्थन दिया था। सभी राज्य सरकारों तथा केंद्र सरकार ने आर्थिक सहायता दी थी जिस तरह

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कन्याकुमारी, तीन समुद्रों के मिलन का स्थान है, उसी तरह से यह स्मारक भी एक केंद्र बिंदु है। विवेकानन्द शिला स्मारक का निर्माण कार्य जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा था वैसे-वैसे एकनाथ जी के मन एवं मस्तिष्क में यह विचार चल रहा था कि की क्या केवल स्वामी जी की मूर्ति की स्थापना के लिये उनका जन्म हुआ है तथा क्या यह केवल मूर्ति स्थापना से ही स्वामी जी के विचारों से समस्त विश्व को परिचित कराया जा सकता है? नहीं बिल्कुल नहीं हमें स्वामीजी के विचारों को साकार करने के लिये जीवन्त व्यक्तियों के समूह की जो त्याग, तपस्या के लिये तैयार हो तथा उनके अन्दर राष्ट्र के लिये कुछ कर गुजरने की चाहत हो और जिनके अन्दर राष्ट्र से प्रेम हो, कि आवश्यकता होगी तब एकनाथ जी के मन में शिला स्मारक के निर्माण के समय से ही विवेकानन्द केंद्र की स्थापना का विचार आ गया था। *"किस प्रकार इस प्रकल्प के बारे में विचार-विमर्श प्रारंभ हुआ और किस प्रकार प्रथम चरण में ही द्वितीय चरण के बीज बो दिए गए थे जब हम स्मारक-योजना प्रथम चरण को कार्यान्वित कर रहे थे तब विवेकानन्द केंद्र की स्थापना के विचार ने जड़ पकड़ ली थी"* **(व्यास,2012)**।

विवेकानन्द शिला स्मारक: स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 को हुआ था। सन् 1962 में स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म के 100 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में रामकृष्ण मिशन द्वारा स्वामी जी के एक सौवें जन्मदिवस से एक सौ एकवें जन्म दिवस तक की समूची अवधि को अखिल भारतीय स्तर पर शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने की योजना बनायी। अतः स्वामी जी के दिए गए जीवनोपयोगी उपदेशों और उनकी जीवनी के बारे में अनेक जगहों पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जब संपूर्ण भारतवर्ष में स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा था उसी समय कन्याकुमारी के निवासियों ने सोचा कि जो श्रीपाद् शिला है जहां पर देवी पार्वती ने भगवान शिव को वर रूप में प्राप्त करने के लिए दाहिने पांव पर खड़ी होकर ध्यान और तपस्या की थी। इसी शिला पर बैठकर स्वामी विवेकानन्द जी ने 25, 26 और 27 दिसंबर 1892 तीन दिन व तीन रात ध्यान किया था, चिंतन-मनन किया था और उन्हें भविष्य के लिए मार्गदर्शन मिला तथा यहीं पर स्वामी जी को उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस ने दर्शन दिया। इसलिए सभी व्यक्तियों की यही इच्छा थी कि वहां पर एक स्मारक बनना चाहिए। वे परस्पर मिले और उन्होंने अपना विचार प्रकट किया कि *"हम इस स्मारक को बनाए और पैदल चलने वाले व्यक्तियों के लिए एक पुल भी बनाए ताकि लोग शिला तक जा सके"* **(व्यास,2012)**। उसी समयान्तर पर रामकृष्ण मिशन के प्रमुख स्वामी सत्त्वानंद एक जनसभा आयोजित कर रहे थे। उस समय उनके भी मन में कन्याकुमारी के लोगों की तरह वहां पर स्मारक बनाने की बात मन में आयी थी। इस प्रकार एक ही समय में एक समान विचार मद्रास और कन्याकुमारी के लोगों के मन में प्रविष्ट हुयी। तदुपरांत कन्याकुमारी समिति और मद्रास के लोग संगठित हुए और योजना बनाना प्रारंभ किया। योजना की जानकारी वहां के अन्य समुदाय के लोगों को हुयी। जिसके उपरान्त समिति के

सदस्यों और उनसे झगड़े की नौबत आ गयी। तब समिति के सदस्यों ने सोचा कि समस्या तो कोई अलग ही मोड ले रहा है और उन्हें इस कार्य हेतु अखिल भारतीय समिति का निर्माण करना चाहिए। इस दिशा में प्रयत्न होने लगा कि वह समिति अखिल भारतीय समिति में परिवर्तित होनी चाहिए। उसके बाद केरल के श्री मन्नाथ पद्मनाभन् जी को अध्यक्ष चुना गया और देश के कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क स्थापित किया, और नवम्बर 1962 को समिति का निर्माण हुआ। जिसका सन् 1963 में पंजीकरण हुआ। इसके बाद सरकार की आज्ञा से 17 जनवरी 1963 को शिला पर एक शिलालेख प्रतिस्थापित किया गया। जिसके बाद वहां बड़ा समारोह, शोभायात्रा और जनसभा आयोजित की गई। उसी सभा में कुछ लोगों ने कहा कि इस प्रकार का शिलालेख पर्याप्त नहीं होगा वहां तो मूर्ति की स्थापना होनी चाहिए। शिलालेख स्थापित होने के कुछ समय पश्चात् द्वेष की भावना से कुछ स्थानीय समूह के व्यक्तियों ने यह निश्चय किया कि उस शिलालेख को भी हटाना चाहिए। *"एक दिन जब सुबह समुद्र में तूफान था और नौकायें पानी पर नहीं चल सकती थी, तब उन्होंने शिलालेख को तोड़ डाला और समुद्र में फेंक दिया जिसका अभी तक पता नहीं लग सका है। उसके कारण बड़ा कोलाहल हुआ, आंदोलन हुआ, जुलूस निकाले गए और अपने से बड़े अधिकारियों को भी तार भेजे गये"* **(व्यास,2012)**।

एकनाथ रानडे जी उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाहक थे। उक्त घटनाक्रम तक वे समिति से नहीं जुड़े थे। वे अपनी पुस्तक 'कथा विवेकानन्द शिला स्मारक की' में लिखते हैं कि, *"राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सरकार्यवाहक होने के नाते देश के चारों ओर यात्रा किया करता था। उस समय मैं कन्याकुमारी भी आया था बस यहां तक ही मेरा संबंध था परंतु उस समय मेरा कोई सीधा संबंध समिति से नहीं था"* **(व्यास,2012)**।

एकनाथ जी ने विवेकानन्द केंद्र का काम, पहले चरण अर्थात् विवेकानन्द शिला स्मारक का काम पूरा हो जाने के बाद हाथ में लिया हो, ऐसी बात नहीं थी। जैसे-जैसे ग्रेनाइट से बने स्मारक का काम प्रगति कर रहा था, केंद्र की कल्पना लोगों के हृदय में आकार लेती जा रही थी। एकनाथ जी के विचार स्वामी जी के विचारों के अनुरूप ही थे उनका मानना था कि *"आवश्यकता है केवल उन उपेक्षित और परतंत्र लोगों के प्रति नैसर्गिक जन्मजात आस्था और आत्मीयता रखने वाले समर्पित कार्यकर्ताओं की व उनके सुनियोजित संगठित प्रयत्नों की। विवेकानन्द स्मारक उस महान उद्योग पर्व का सूत्रपात मात्र है। लेकिन इस स्मारक के निर्माण के अलावा, जो निःसंदेह वहां स्वामी जी के देवी रूपांतरण का पवित्र प्रतीक होगा, समुचित होगा कि हमारे देश के उस दक्षिणी छोर से ऊपर की ओर राष्ट्र निर्माण के लिए मूलभूत गतिविधियाँ तीव्र गति से चलाई जाएं, जिनकी अभिकल्पना उस महान देशभक्त देवदूत ने देश के खोए हुए व्यक्तित्व की पुनर्प्राप्ति के उद्देश्य से तथा देशवासियों की उन्नति के लिए की थी और जिसके लिए उसी क्षण से उन्होंने अपना जीवन भी समर्पित किया था। इसे प्राप्त करने के लिए एक तरफ ध्येय*

प्रेरित समर्पित व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना, उन्हें कार्यकर्ता के रूप में ढालना व दूसरी ओर ऐसे कार्यकर्ताओं के दलों को बड़ी संख्या में कार्यक्षेत्र में तैनात करके देशवासियों को शिक्षण, प्रकाशन और सेवा के माध्यम से उनके महान ध्येय और विरासत के बारे में जागृत करना, यह हमारी दृष्टि में मूलभूत कार्य है, जिनके लिए स्वामी जी जीवित रहे और तिरोहित भी हुए" **(भिड़े एवं परांजपे, 2015)**। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से अभिभूत एकनाथ जी का कहना था कि *"शिला स्मारक तभी उपयोगी सिद्ध होगा जब स्वामी विवेकानन्द के विचार लोगों के मन में तथा कर्म में रहेंगे। सही अर्थों में चिरंतन स्मारक का स्थान तो जनसाधारण का हृदय ही होता है और यह तभी संभव होगा, जब एक वैसा ही विचार लेकर, एक जीवंत स्मारक, यानी एक सेवा भावी संगठन की स्थापना हो"* **(भिड़े एवं परांजपे, 2015)**। इन उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के लिए एकनाथ जी घूमने फिरने लगे और गैर-सन्यासी सेवा संगठन और समर्पित कार्यकर्ताओं के अखिल भारतीय प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना के कार्यों का सूक्ष्मता से नियोजन करने में जुट गए।

"नौ वर्षों के आधारभूत कार्य के बाद, 7 जनवरी 1972 को विवेकानन्द केंद्र की विधिवत् स्थापना की गई। उस दिन स्वामी विवेकानन्द की 108 वीं जयंती थी। उस पवित्र दिन पूर्व छितिज पर अपनी लालिमा बिखेरते हुए जैसे ही सूर्योदय हुआ, ओम अंकित भगवा ध्वज विवेकानन्द शिला स्मारक के प्रसन्न वातावरण के बीच आकाश में लहराने लगा और इसी के साथ स्थापना हुई विवेकानन्द केंद्र एक आध्यात्मिक सेवा संगठन की। एकनाथ जी के माध्यम से स्वामी विवेकानन्द का वह भव्य स्वप्न साकार हो रहा था। राष्ट्र सेवा में लीन एक गैर सन्यासी संगठन का जन्म हुआ था" **(भिड़े एवं परांजपे, 2015)**।

विवेकानन्द केंद्र के उद्देश्य : एकनाथ रानडे जी निधि संकलन के दौरान ही महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क बनाकर समिति गठन के कार्यों तथा उद्देश्यों पर भी विचार मंथन कर रहे थे *"स्मारक निर्मिती के कुछ समय बाद ही स्मारक योजना के द्वितीय चरण अर्थात् गैर-सन्यासी, किंतु अध्यात्म प्रेरित, सेवा संगठन की स्थापना का कार्य किया गया। '**विवेकानन्द केंद्र**' नाम का यह संगठन एक आंदोलन है जो स्वामी विवेकानन्द के जीवन और व्यक्तित्व से ऊर्जा पाकर गतिमान हुआ है। इस आंदोलन का उद्देश्य केंद्र के महासचिव श्री एकनाथ रानडे द्वारा देश के विभिन्न शहरों में जनसभा को संबोधित करते हुए दिये गये व्याख्यान में से स्पष्ट किए जा सकते हैं"* **(भिड़े एवं परांजपे, 2015)**। जो कि निम्न है –

1. हमारी राष्ट्रीय प्रकृतिः मुक्ति की कामनाः इस देश को धर्म और अध्यात्म की भूमि कहा जाता है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि, *"हमारे देश की आत्मा धर्म है। इस देश के लोगों ने मुक्ति को ही सर्वोच्च पुरुषार्थ माना है। यहां तक कि, राज्यशास्त्र सरीखे लौकिक विषयों से संबंधित परंपरागत ग्रंथ भी अपने प्राक्कथन में ही घोषणा कर देते हैं कि उन शास्त्रों का अंतिम लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य को उसी आध्यात्मिक लक्ष्य अर्थात् मोक्ष की ओर बढ़ने में सहायता देना है"* **(भिडे, 2012)**।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोना: एकनाथ रानडे जी कहते थे कि, *"किसी विशिष्ट नगर में यदि कोई स्वयं को सिक्ख, आर्यसमाजी, जैन या बौद्ध नाम से संबोधित करता है तो कोई बात नहीं, परन्तु वह सब वैदिक हैं। सम्पूर्ण आप्तवचन वेदों से प्रवाहित होता है। उन्होंने निर्देश दिया कि व्यक्तिगत झंडे कोई भी हो हमें सभी लोगों को एकता के सूत्र में बांधना होगा तथा उन्हें एक सूत्र में पिरोना होगा"* **(व्यास, 2012)।**

3. वर्तमान परस्पर विरोधी स्थिति को मिटाना: *"आज हमारे देश में वर्तमान समय में लाखों लोगों के द्वारा मंदिरों में दर्शन, तीर्थ-यात्रा, कीर्तन, भजन, यज्ञ, अनुष्ठान, धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवचनों को सुनने तथा देश में बड़ी संख्या में धर्मगुरुओं के उपदेश एवं साधु-संतों के अस्तित्व को यदि देखा जाए और इसे ही धार्मिक अभिव्यक्ति का लक्षण माना जाए, तब संभवतः हमारा देश अतीत के किसी भी कालखंड की अपेक्षा आज अधिक धार्मिक कहलाने का अधिकारी है किंतु दुर्भाग्य से इस ऊपरी इश्वरोन्मुखता का सामाजिक जीवन पर अपेक्षित स्वाभाविक परिणाम कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि अतीत के काल में यह सभी लक्षण हमारे देश में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थे, किंतु अब यह तेजी से हमारे अंदर से तिरोहित होते जा रहे हैं"* **(व्यास, 2012)।** अतः केंद्र के कार्यों द्वारा हमें इस परस्पर विरोधी स्थिति को मिटाना होगा समाप्त करना होगा।

4. मूल रोग: धर्म या आध्यात्मिकता की विकृत धारणा: रानडे जी कहते थे कि *"हमारे देश की आध्यात्मिक शक्तियां बिखरी पड़ी है, इसके लिए हमें पैने दृष्टिकोण को अपनाना होगा जिससे हम इसे देख सकें क्योंकि गत कई शताब्दियों से धर्म की विकृत धारणा का प्रचलन ही हमारी समस्त व्याधियों का मूल कारण रहा है और हम आज भी उससे चिपके हुए हैं जिसके कारण आज सर्वतोमुखी पतन का दृश्य उत्पन्न हुआ है"* **(भिड़े, 2015)।**

5. शुद्ध धर्म भाव के लक्षण को जागृत करना: *"धार्मिक जागृति का अर्थ है, अंतरात्मा एवं सम्पूर्ण विश्व में ईश्वर का दर्शन करना। इससे मनुष्य आंतरिक दिव्यत्व के प्रति जागरूक होने लगता है और आध्यात्मिक विकास के लिए कार्य करने की प्रेरणा उसमें जगने लगती है। फलस्वरूप वह समस्त मानव जाति के प्रति बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत हो उठता है और मानव कल्याण तथा प्रगति के लिए कार्य करने की लगन, उसमें उत्पन्न हो जाती है। अतः हमें केंद्र के द्वारा लोगों में शुद्ध धर्म भाव के लक्षण को जागृत करना होगा तथा उससे राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना होगा"* **(भिड़े एवं परांजपे, 2015)।**

6. स्वामी जी का आह्वाहन: उस प्रभु की पूजा करो जो हमारे चारों ओर देख रहे हैं: मानव सेवा ही ईश्वर पूजा है। ईश्वर की पूजा करने का वास्तविक अर्थ यह है कि *"जिसको आप चारों ओर देखते हैं उनकी सेवा एवं भलाई का कार्य करना। ईश्वर कहीं स्वर्ग में बैठा हुआ नहीं है बल्कि वह हमारे चारों ओर जगत में अभिव्याप्त है। हमें प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर को देखने में सक्षम होना चाहिए। इसलिए यदि*

आपका लक्ष्य ईश्वर की पूजा है तो आपको उसके संसार की पूजा करनी होगी **(व्यास, 2012)**। तभी हम अन्य सब देवताओं की उपासना के अधिकारी भी बन सकेंगे। हमें अपने केंद्र के कार्यकर्ताओं के माध्यम से लोगों के अंदर इस अनुभूति को जगाना होगा, लाना होगा।

निष्कर्ष: एकनाथजी जब कलकत्ता के रामकृष्ण मिशन में रहकर स्वामी जी के ग्रंथों का अध्ययन कर रहे थे तभी से उनके मन में स्वामी जी के विचारों को सार्थक रूप देने के लिए किसी न किसी रूप में कार्य करने की योजना उनके मस्तिष्क में चल रही थी। ईश्वर एवं स्वामी जी के आशीर्वाद से उन्हें विवेकानंद शिला स्मारक, कन्याकुमारी से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ जहां सर्वप्रथम उन्होंने शिला स्मारक के निर्माण के साथ-साथ विवेकानंद केंद्र की भी स्थापना की। जिसमें उनका मुख्य ध्येय ही था कि लोगों के अंदर धर्म का जो अज्ञान है उसे समाप्त किया जाए। जैसा कि स्वामी जी के विचारों में सदा ही परिलक्षित होता रहा था। स्वामी जी ने यह भी पाया कि लोगों में धर्म के प्रति अज्ञानता व पिछड़ेपन का सर्वप्रमुख कारण शिक्षा है। इसलिये स्वामी विवेकानंद जी ने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जहां सभी मनुष्य शिक्षित, सभ्य एवं सुसंस्कृत हों इसके साथ-साथ समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। ऐसे समाज की संकल्पना केवल शिक्षा द्वारा ही पूरी हो सकती है जहां सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य मनुष्य निर्माण हो। इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को मनुष्य के साथ जोड़ना होगा, मिलाना होगा। इसके लिए स्वयं भारत की जनता को आगे आना होगा। आगे आने का यह दायित्व स्वामी जी ने शिक्षित जन समुदाय को सौंपा। एकनाथ जी ने इस दिशा में भी कार्य करने के लिए तथा देश से अज्ञानता को मिटाने के लिए उन्होंने विवेकानंद केंद्र विद्यालयों की श्रृंखला शुरू की आज विवेकानंद केंद्र भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में विद्यालय का सफल संचालन कर रहा है और विश्व विख्यात हो रहा है।

"भारत को जगद् गुरु बनाने के लिए तपश्चर्या की परंपरा को अपनाकर, विवेकानन्द केंद्र में आने वाले युवा कार्यकर्ता स्वामी विवेकानन्द का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के लिए कटिबद्ध रहेंगे। सिंह के पौरुष से युक्त, परमात्मा के प्रति अटूट निष्ठा से संपन्न और पावित्र्य की भावना से उदिप्त सहस्त्रों नर-नारी, दरिद्रों एवं उपेक्षितों के प्रति हार्दिक सहानुभूति लेकर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक भ्रमण करते हुए मुक्ति का, सामाजिक पुनरुत्थान का, सहयोग और समता का संदेश देंगे" **(भिड़े एवं परांजपे, 2015)**। एकनाथ जी के माध्यम से स्वामी विवेकानन्द का वह भव्य स्वप्न साकार हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भिड़े, एन, आर. और परांजपे, एस. (2015). एकनाथजी: विवेकानन्द केंद्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, योगक्षेम गीता भवन, जोधपुर, राजस्थान.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यास, एम. पी. (2012). कथा विवेकानन्द शिला स्मारक की: विवेकानन्द केंद्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, योगक्षेम गीता भवन, जोधपुर, राजस्थान.

लाल, आर. बी. (2011). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत: रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ, दिल्ली.

अहूजा, आर. (2016). सामाजिक समस्याएं, रावत पब्लिकेशनस: सत्यम अपार्टमेंट्स, सेक्टर-3 जवाहर नगर, जयपुर.

मिश्र, डॉ. एस.एस. (2011). स्वामी विवेकानन्द: शिक्षा-दर्शन: शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज.

https://www.jagranjosh.com/current-affairs/govt-announces-winners-of-gandhi-peace-prize-for-2015-2018-in-hindi-1547703105-2

https://khabar.ndtv.com/news/india/vivekananda-center-gave-one-crore-rupees-of-gandhi-shanti-puraskar-to-families-of-pulwama-martyrs-1999604

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies